बार्हस्पत्यो भरद्वाजः।पूषा। गायत्री, ८ अनुष्टुप्।

वयमु त्वा पथस्पते रथं न वाजसातये। धिये पूषन्नयुज्महि॥ ६.०५३.०१

पथस्पते- मार्गपालक। पूषन्- पोषक सूर्य। वयम्। वाजसातये- धनलाभाय। रथम्। न- इव। धिये- बुद्धिलाभाय। अयुज्महि- योजयामः ॥१॥

अभि नो नर्यं वसु वीरं प्रयतदक्षिणम्। वामं गृहपतिं नय॥ ६.०५३.०२

नः- अस्मान्। नर्यं- नरहितम्। वसु- धनं प्रति। अभि- आभिमुख्येन। नय- प्रापय। प्रयतदक्षिणम्- शुद्धधनयुक्तम्। वामम्- कल्याणम्। गृहपतिम्- गृहस्थं प्रति नय ॥२॥

अदित्सन्तं चिदाघृणे पूषन्दानाय चोदय। पणेश्चिद्वि म्रदा मनः॥ ६.०५३.०३

आघृणे- दीप्तिमन्। पूषन्- पोषक सूर्य। अदित्सनतम्- दातुमनिच्छन्तम्। चित्- अपि। दानाय। चोदय- प्रेरय। पणेः- लोभिनः। मनः- चित्तम्। वि- विशेषेण। म्रद- मृदूकुरु ॥३॥

वि पथो वाजसातये चिनुहि वि मृधो जहि। साधन्तामुग्र नो धियः॥ ६.०५३.०४

वाजसातये- सम्पल्लब्धये। पथः- मार्गान्। वि- विशेषेण। चिनुहि- शोधय। मृधः- शत्रून्। वि- विशेषेण। जहि- बाधस्व। उग्र- उद्गूर्ण। नः- अस्माकम्। धियः। साधन्ताम्- सफलाः कुरु ॥४॥

परि तृन्धि पणीनामारया हृदया कवे। अथेमस्मभ्यं रन्धय॥ ६.०५३.०५

कवे- क्रान्तदर्शिन्। पणीनाम्- लोभिनाम्। हृदया- हृदयानि। आरया- प्रतोदेन। परि तृन्धि- परिविध्य। अथ- अनन्तरम्। ईम्- एतान्। अस्मभ्यम्- अस्मदर्थम्। रन्धय- वशीकुरु ॥५॥

वि पूषन्नारया तुद पणेरिच्छ हृदि प्रियम्। अथेमस्मभ्यं रन्धय॥ ६.०५३.०६

पूषन्- पोषक सूर्य। आरया- प्रतोदेन। वि- विशेषेण। तुद- विध्य। पणेः- लोभिनः। हृदि- हृदये। प्रियम्- प्रेम। इच्छ- कारय। अथ- ततः। ईम्- एतम्। अस्मभ्यम्- अस्मदर्थम्। रन्धय- वशीकुरु ॥६॥

आ रिख किकिरा कृणु पणीनां हृदया कवे। अथेमस्मभ्यं रन्धय॥ ६.०५३.०७

पणीनाम्- लोभिनाम्। हृदया- हृदयानि। आ रिख- आलिख। कवे- क्रान्तदर्शिन्। किकिरा- शिथिलानि। कुरु ॥७॥

यां पूषन्ब्रह्मचोदनीमारां बिभर्ष्याघृणे। तया समस्य हृदयमा रिख किकिरा कृणु॥ ६.०५३.०८

पूषन्- पोषक सूर्य। आघृणे- दीप्त। याम्- यम्। ब्रह्मचोदनीम्- मन्त्रचोदकम्। आराम्- प्रतोदम्। बिभर्षि- धारयसि। तया। समस्य- सर्वस्य पणेः। हृदयम्। आ रिख- आलिख। किकिरा कृणु- शिथिलानि कुरु ॥८॥

या ते अष्ट्रा गोपशाघृणे पशुसाधनी। तस्यास्ते सुम्नमीमहे॥ ६.०५३.०९

या। ते- तव। अष्ट्रा- आरा। गो ओपशा- गावां शमयित्री। पशुसाधनी- पशूनां साधयित्री। तस्याः। ते- तव। सुम्नम्- सुखम्। ईमहे- याचामहे ॥९॥

उत नो गोषणिं धियमश्वसां वाजसामुत। नृवत्कृणुहि वीतये॥ ६.०५३.१०

उत- अपि च। नः- अस्माकम्। गोषणिम्- गोसम्भक्रीम्। अश्वसाम्- अश्वसम्भक्रीम्। वाजसाम्- अन्नसम्भक्रीम्। उत- अपि च। नृवत्- वीर्यवतीम्। धियम्। वीतये- अनुभूतये। कृणुहि- कुरु ॥१०॥